अंक 12, दिसंबर 2014, कुल पृष्ठ 8 | मेहनत करो खामोशी से कि सफलता शोर मचा दे : विष्णु गोयल | मूल्य मात्र 10 रू

मैं भगवान राम को मानती थी मैंने अपनी पूजा में 21 बार कल्कि जी के मंत्र का जाप जोड़ा तो कल्कि जी स्वप्नानुभव में बोले तू मेरी क्या मैं तेरी उंगुली पकड़ता हूँ। तब से मेरे कल्कि ही मेरे राम हैं मेरे कल्कि ही मेरे श्याम हो गए—संजू गड़ौदिया

श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ का आयोजन हर महीने गंगा घाट सम्भल एवं यमुना जी के घाट पर किया जाता है ताकि भगवान श्री कल्कि शीघ्र प्रगट हों और कलियुग का विनाश कर सत्युग की स्थापना करें—मामाजी

भगवान विष्णु हर युग में धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश हेतु अवतार लेते हैं। इस समय जो धर्म की हानि पृथ्वी पर हो रही है हमारे नारायण इतने निष्ठुर नहीं कि वह चार लाख बत्तीस हजार वर्ष तक इंतजार करेंगे—इंदू बंसल

हिंदू धर्म और संस्कृति का जिस षडयंत्र के साथ लोप किया जा रहा है ऐसे में महाविष्णु का कल्कि रूप में आना शास्त्रो के अनुसार तो है ही बल्कि परिस्थितियाँ भी कल्कि जी के प्राकटय के अनुकूल हैं—पद्माशरण गोयल

द्रौपदी ने जब नारायण को दोनों हाथ ऊपर उठाकर पुकारा था तब श्री हरि किसी समय सीमा में नहीं बंधे थे। इस समय जबकि कलियुग के चौथे चरण के लक्षण विद्यमान हैं भक्तों की पुकार पर प्रभु अवश्य आएंगे—मेघना गोयल

मैं भगवान श्री कल्कि से स्वप्नानुभवों के माध्यम से जुड़ी। दशावतारों में कल्कि जी के बारे में पढ़ा था। लेकिन कल्कि जी का नाम लेते ही भगवान ने स्वप्नानुभवों में मुझे मार्गदर्शन देना शुरू कर दिया—संगीता गर्ग

श्री अशोक गड़ौदिया

श्री राकेश गुप्त

सुबह 5 बजे दिल्ली के यमुना घाट पर हर महीने होने वाले श्री कल्कि सहस्त्रनाम हवन का प्रसारण पूर्वी दिल्ली के चैनल सीसीएन डेन पर भगवान श्री कल्कि की 24 मिनट की डॉक्यूमेंट्री के साथ किया गया जिसका शीर्षक है वो आ रहा है। इस अथक प्रयास के लिए श्री राकेश गुप्त एवं श्री अशोक गड़ौदिया जी साधुवाद के पात्र हैं

सी सी एन डेन पर भगवान श्री कल्कि की डॉक्यूमेंट्री का प्रसारण 12 व 13 नवंबर 2014 को दिन में 2:30 बजे व रात्रि 8:30 बजे किया गया। पृष्ठ 12 पर देखिए इसकी विशेष झलकियाँ

पटना में गंगा जी के कलक्ट्री घाट पर मां तारापुर मंदिर जहां निरंतर कई वर्षों से धूना जलता है **भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना 17-18 जनवरी** 2015

सभी कल्कि भक्त सादर आमंत्रित हैं पहले से बताने पर सशुल्क रहने की व निशुल्क खाने की व्यवस्था उपलब्ध है

संपर्क : श्री महेश बंसल (9431459545), मामाजी (9136377829)

सहर रेडियो चैनल पर कल्कि जी के भजन हर बुधवार और शनिवार को प्रातः 5 से 7 बजे

*** बेखबर जाग जरा दिन निकलने वाला है * भूमि का उतारो भार * श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ कल्कि रूप में * दुर्गा स्तुति * स्वांस में सुमिरन समा गया * कलियुग केवल नाम आधारा * आओ सुनाएं हनुमान की कथा * हे काल रूप कल्कि प्यारे * तेरा जीवन बिरथा बीत गया**

भगवान श्री कल्कि के इन दस भजनों में से दो भजन हर बार चलाए जा रहे हैं।

Kalki Group (Real) has been transformed. Have a look @ www.facebook.com/shreekalki

सच्ची आपबीती कल्कि समाज को

कल्कि जी से लेने वाला चाहिए जीवन, धन, घर, व्यापार जीवन

—सुश्री रश्मि गनेरीवाल (कोलकाता) मो०—0983273015

(तीन साल पहले से श्री कल्कि ने मेरा या मैंने श्री कल्कि जी का दामन थामा। उनकी ही कृपा से मुझे रास्ता मिलता गया और उनकी प्रसन्नता के कई कार्य मुझसे करवाये। पर आज प्रथम अवसर है कि मैं अपने अनुभव और आभार लिख कर कल्कि बाल वाटिका के हर सदस्य के साथ बाँट रही हूँ)

सन् 2009 में मैंने कल्कि का नाम पहली बार अपनी कोलकाता निवासी मौसी सुश्री प्रतिभा अग्रवाल से सुना जब उन्होंने श्री कल्कि जी की मूर्ति की स्थापना कोलकाता के सिद्ध बैशाखी मंदिर में की थी। मैं कल्कि नाम के प्रति कुछ विशिष्ठ सा खिंचाव सा महसूस करने लगी थी। अपने छोटे पुत्र राघव के साथ तय किया कि हम भी एक कल्कि जी की (बिना कोई संकल्प लिये) मूर्ति की स्थापना करवाएंगे। क्योंकि मैं सर्व सुख सम्पन्न थी। जैसे बादलों पर सवारी करती थी। हमने कई जगह बात भी की और बहुत प्लानिंग भी की। तभी से स्वप्न अनुभव आने शुरु हो गए। लेकिन अनुभवों में मेरा विश्वास बिलकुल नहीं था। संकल्पों और अनुभवों को मैं बनावटी समझती थी।

2010 अक्टूबर 29 को मेरे ऊपर वज्राघात हुआ और मेरा हट्टे-कट्टे, अति सुन्दर-स्वस्क्थ बेटे 'राघव' (बिना किसी वजह या बीमारी के) की तांत्रिक शक्तियों के चक्रव्यूह में अकाल मृत्यु हो गई। विशेष बात यह कि **होई अष्टमी** के दिन ही मेरा बेटा राघव हमेशा के लिये मुझे छोड़कर चला गया।

मैं श्री राणी सती और माँ काली की अनन्य भक्ता थी और अपने जीवन काल में कई बार उनकी स्पष्ट अनुभूति महसूस की थी और आभास (अनुभव) भी किये थे। मेरी समझ में यह नहीं आ रहा था कि मेरी माँ के होते हुए यह अनहोनी घटना मेरे साथ कैसे हो गई।

मैंने न तो श्री कल्कि जी की माला जपी, ना हवन किया, ना आठ बार की नमस्कार की, सिर्फ कल्कि नाम लेती थी क्योंकि यह नाम जुबान पर अच्छा लगता था। इस पर प्रभु की दयालुता तो देखिये, मेरे दु:ख से मेरे कल्कि अधीर हो उठे थे और अपनी परम भक्ता सुश्री इंदू बंसल को मुझे मार्ग दिखाने के लिऐ हवाई जहाज से अकेले भेजा।

इस घटना पर मेरी दिल्ली निवासी मासी इंदु बंसल मेरे पास कोलकाता आईं। दीपावली के पर्व का समय था। सबने उन्हें आने के मना किया पर वह जैसे किसी शक्ति के प्रभाव में मेरे से मिलने को विचलित हो गईं। वह किसी के रोकने पर भी ना रुकीं। क्योंकि मेरे कल्कि जी ही उन्हें भेज रहे थे।

मैंने कल्कि जी की मूर्ति की स्थापना की कोशिश की लेकिन स्वप्न अनुभवों के प्रति लापरवाह रही। इसी का दुखद परिणाम था कि कलियुगी शक्तियों से मार खा गई*। और तब मैंने इंदु मौसी से अपने कल्कि की कार्य प्रणाली को जाना।

राघव के जाने के चार-पाँच दिन पश्चात् मुझे ऐसा लगा कि जिन काली शक्तियों ने मुझसे मेरा एक बेटा छीना है, वह मेरे पति और दूसरे बेटे (विट्ठल) पर भी प्राणाघात करने को तत्पर हैं। रात दो बजे मैंने इंदु मासी को उठाकर कल्कि नाम का सुरक्षा कवच प्राप्त किया। फिर अनुभवों द्वारा मैंने मौसी से पूछकर-(मौसी के समझ न आने पर वह मामाजी से पूछकर) संकल्पों द्वारा अपने परिवार की प्राण रक्षा करती गई। कल्कि कृपा से उनके विशेष कार्य का अवसर भी प्राप्त हुआ जो वह मुझसे अदले के बदले (Tit for Tat) मे चाहते हैं।

2011, मार्च में मेरे श्री कल्कि कोलकाता के सिद्ध मंदिर (पॉवर हाऊस) काली घाट मंदिर के प्रांगण में विराजे। 2011, सितम्बर में श्री कल्कि भगवान विशेष धूम-धाम से श्री राणी सती मंदिर काकुड़गाची में विराजे। इसमें दिल्ली से लगभग 21 कल्कि भक्त माँ राणी सति प्रभु श्री कल्कि ने विशेष बुलाये। कल्कि जी की प्रेरणा से कल्कि भजन सी.डी. (विष्णु के अवतारी कल्कि भगवान हैं-यही मेरे राम हैं यही मेरे श्याम हैं-श्याम अग्रवाल द्वारा) ने मुझे माध्यम करके बनवाई। इसमें श्री कल्कि प्रभु ने मुझे से विशेष काम लिया कि मुझे भी अपने स्वर देने का सुअवसर प्रदान किया। तब मैंने जाना कि जब हम प्रभु कल्कि का कोई कार्य करते हैं ता हम कल्कि जी पर काई अहसान नहीं कर रहे बल्कि ऐसा करने से कल्कि जी हम पर अहसान कर रहे हैं जिसका कुछ भुगतान (Repayment)हम कर रहे हैं। कल्कि जी का काम करने से मुझे आगे बढ़ने के रास्ते मिलते चले गये। बहुत सी परेशानियाँ आईं, बहुत संघर्ष किया पर मैंने अपने कल्कि जी को नहीं छोड़ा और ना उन्होंने मुझे।

जब श्री कल्कि ने लाखों की भीड़ में मुझे चुना और कहा कि **'मैंने तुम्हें चुना है'**

मामाजी (श्री ओ.पी. गुप्ता) और मासी (इंदु बंसल) का विशेष सहयोग पग-पग पर मिलता रहा। वे जैसे मेरे मार्ग दर्शक बन गये और कल्कि जी मेरी मंजिल। फिर मुझे एक अनुभव आया जिसमें श्री कल्कि ने लाखों की भीड़ में मुझे चुना और कहा कि **'मैंने तुम्हें चुना है'**।

इस अनुभव के सवेरे ही मेरे पति श्री मनोज गनेरीवाल ने मुझसे बच्चों को अपनी पूजा शैली सिखाने के लिऐ प्रेरित किया। प्रभु कल्कि की दया से-सुश्री प्रतिभा अग्रवाल, श्रुति सर्राफ, अकांक्षा चौधरी सब के सब कल्कि भक्त के साथ मैंने बच्चों का सुन्दर किट तैयार किया, प्रोजेक्टर खरीद अपनी टीम के सदस्यों के साथ तीन दिन का संस्कृति शिविर एक मॉनटेसरी स्कूल में 20 बच्चों के साथ किया। मौसी, मामाजी और कल्कि बाल वाटिका (कोलकाता) से प्रोत्साहन मिलता रहा।

भगवानों के लिये कल्कि का करने पर निहाल हुई।

मामाजी और इंदु मासी के प्रयत्नों से अप्रैल 2012, में तीन दिन का शिविर हमने दिल्ली में, खास कल्कि बाल वाटिका के सदस्यों के लिए किया। फिर तो जैसे मेरे कल्कि का प्यार मुझपर बरस पड़ा। **मेरा मुकदमें बाजी में बंद पड़ा पैट्रोल पम्प दिल्ली के शिविर के बाद कोलकाता आने पर खुल गया। यह मेरे ही लिये नहीं मेरे परिवार के लिये चमत्कार था।** 2013, मई में कल्कि जी ने जैसे अपनी हथेली पर बैठा कर मुझे पुराने घर से नये घर में पहुँचा दिया। (क्योंकि

** यदि अनुभवों पर ध्यान करके मैं संकल्प, उपचार कर लेती तो जैसे मैंने अब अपने बेटे (विट्ठल), पति को बचाया, उसे भी बचा लेती।*

पुराने घर में मेरे पति और पुत्र को तांत्रिक शक्तियों ने जान को खतरा पैदा किया हुआ था।) 2013, जून में श्री कल्कि ने मेरे पुत्र को स्वर्ण पदक प्राप्त (सेंट जेवियर्स) उत्तम घर की कन्या से शादी पक्की करवाई।

क्योंकि मैं लगातार जीतती जा रही थी तब ही 2013, दिसम्बर में, अपने पुत्र की शादी के समय, कलियुगी शक्तियाँ फिर से सक्रिय हो गईं। शादी के 15 दिन पहले मेरे पुत्र (विट्ठल) को एक स्वप्नानुभव आया ''उसने पत्थरों का बना एक प्राचीन मंदिर देखा जहाँ कल्कि जी स्वयं, तीन पवित्र नदियों का जल, तीन देवताओं की पत्थर की मूर्ति के मुख से, एक लोटे में इकट्ठा कर, प्रभु नटराज का अभिषेक कर रहे हैं। उस मंदिर में एक तरफ गाने वालों का दीवान सजा हुआ है और फिर वहीं से एक एक करके 3 बम विस्फोट की दिल दहलाने वाली आवाज़ आती है। प्रमुख मंदिर जमीन में धंस जाता है। वह जगह पर्दे से ढक जाती है। पर्दा हटता है और एक खम्बे पर कल्कि जी की बहुत सुन्दर मार्बल का मूर्ति (स्टैचू) ऊपर उठता है (रोशनी से जगमगाती हुई और स्क्रीन पर लिखा रहता है (Kalki Avtaar is coming soon, if you want to witness it, take help from army) (जल्द ही कल्कि अवतार आने वाला है। सत्यता परखने के लिए प्रशिक्षित सैनिकों की तुरन्त मदद लें)

मामाजी ने इस नक्शे को देखते ही कहा कि यह तो बाबा विश्वनाथ (वाराणसी) का मन्दिर है जहाँ मूर्ति स्थापना की बात चल रही है। पर यह प्रोजेक्ट हर्षित बंसल का है। लेकिन विट्ठल की अकाल मृत्यु टालने को कल्कि प्रभु चाहते हैं कि **यदि विट्ठल इसे कर ले तो वह राघव की तरह अकाल मृत्यु से बच सकता है।** पर यह खर्चे का मामला था इसलिये मामाजी और इंदु मासी ने संकोच से चुप्पी साध ली और मुझे नहीं बताया।

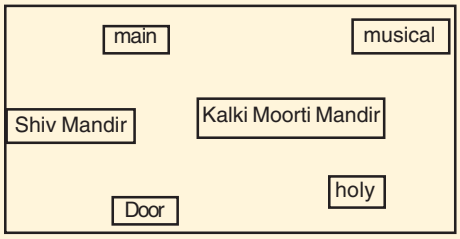

स्वप्न अनुभव का एक चित्रण

लेकिन विशेष बात यह है कि मुझे या मेरे बेटे को बाबा विश्वनाथ के मंदिर में मूर्ति स्थापना होने के विषय में कोई जानकारी भी नहीं थी। इधर ब्याह की शुभ घड़ी आ पहुँची। शादी के पाँच दिन पहले, पंडित जी ने विट्ठल को (हमारे रीति रिवाज के अनुसार) हँसली पहना दी। उसे पहनते ही विट्ठल को बेचैनी होने लगी और उसकी तबीयत बिगड़ने लगी। 5 दिन रोज सुबह-शाम शादी के कार्यक्रम थे। इसमें लगभग 300 से 500 परिवार जन-सहेलियों-दोस्तों-रिश्तेदारों की भीड़ होनी हैऔर विट्ठल खुद के शादी के कार्यक्रम में शामिल नहीं होना चाह रहा है। डॉक्टर आया पर उसने कहा कि कुछ बीमारी है ही नहीं तो मैं क्या दवा दूँ! मुझे समझ नहीं आ रहा था कि शादी कैसे होगी। कई संकल्प और उपचार किये पर रास्ता नहीं मिला लेकिन श्री कल्कि तो उसे अकाल मृत्यु से बचाना चाह रहे थे।

अंतत: शादी की सुबह, मामाजी को परिस्थिति की गम्भीरता को जब मैंने अश्रुग्रस्त आखों से अवगत कराया तब मामाजी ने इंदु मौसी को संकोच त्याग कर इस विषम परिस्थिति से निकलने का मार्ग बताया। मामाजी ने इंदु मौसी को समझाया कि वह मनु वाला प्रोजेक्ट मेरे विट्ठल के लिये छोड़ दे और आश्वासन दिया कि वह कल्कि जी की कृपा से किसी दूसरे सिद्ध पीठ पर प्रयास करके श्री गुरु जी की कृपा से मनु का प्रोजेक्ट पूरा करा देंगे। **कोलकाता वालों के जिद्दी पन से तो आप सब वाकिफ़ हैं ही।** आखिर में मामाजी सफल हुए। मौसी राजी हो गईं तब मैंने तुरन्त बाबा विश्वनाथ में मूर्ति लगवाने का संकल्प लिया। साथियों, क्या कहूँ संकल्प का लेना ही था कि तुरन्त दैवी शक्तियों को विशेष **सुरक्षा कवच सक्रिय हो गया।** मेरे पुत्र की देखते ही देखते शानदार बेहतरीन तरह से परियों की शादी (Fairy Tale Wedding) की तरह से शादी सम्पन्न हो गई।

साथियों, 8 मार्च 2014 में प्रभु कल्कि के बाबा विश्वनाथ में स्थापना का शुभ दिन नज़दीक आ पहुँचा। प्रकृति की विडम्बना देखिये कलियुगी शक्तियों ने फिर मुझ पर आक्रमण किया और इस बार मेरे पति पर धावा बोला। इनकी तबीयत बिगड़ गई और बनारस जाना तो नामुमकिन लगने लगा। उस दिन मामाजी राजधानी से वैद्यनाथ धाम बाबा का धन्यवाद करने अपने तीन भाइयों के साथ जा रहे थे। गाड़ी में ही उन्होंने सुबह सुबह उपचार और पैनल्टी बताई। कमाल है शाम तक मेरे पति ठीक हो गये। मामाजी ने संकल्पों और उपचारों का सटीक तरीका दिया जिससे हम मूर्ति स्थापना करके आ गए।

जो संकल्प, पैनल्टी मामाजी ने ट्रेन में बताए और हमने किये—

21 भिण्डी शंकर भगवान पर अभिषेक करके-राहू की दशा के लिये

1 कटोरी चावल शंकर भगवान को प्रार्थना सहित-चन्द्रमा के दोष हेतू

सूर्य अर्ध्य प्रार्थना सहित आरोग्यता की प्रार्थना के साथ

5 बगुलामुखी माँ के हल्दी वाले परांठे रोग निवारण हेतू

गौ माता से 100 रू प्रतिदिन की हरी सब्जी जिस दिन तक मूर्ति स्थापना होनी है

यमुना महारानी के मर्दाना एवं जनाना वस्त्र, सीधा, पानी, गट, गीली धूप और दक्षिणा क्रोसिन (4), कौम्बीफलेम (4), स्टेमेटिल 5 mg (3), ओटोजेसिल (2), डायलोसिल (2 बोतल), गरीब/बीमारों के लिए प्रार्थना के साथ कि मेरे पति को रोग मुक्त करें।

पति को प्रतिदिन अपने हाथ से महाराज (रसोइये) के होते हुए भी खुद आटा उसनकर (मांडकर) रोटी बनाकर खिलाना

विक्रम तांत्रिक 547 रु प्रतिदिन 9 दिन तक

योगमाया महारानी संकल्प 20 रु प्रतिदिन 9 दिन तक

सामूहिक उपचार श्री कल्कि जी 100 रु प्रतिदिन से 9 दिन तक

उन सभी देवताओं के लिये जो हमारी मदद करके मूर्ति स्थापना का कार्य पूरा करा दें।

10 संतरे 10 रु के साथ शंकर भगवान को (संतरा दिमाग का प्रतीक है, मेरे पति के चक्कर ठीक करें।)

20 जलेबी 20 रु के साथ शंकर भगवान को जो शक्तियाँ मेरे पति के पीछे पड़ गई हैं उनको जलेबी की तरह घुमाकर प्रभु मूर्ति

स्थापना का कार्य पूरा करा दें।

1 गुलाब का फूल, 1 लड्डू, 1 सिक्का सात बार उतार कर चौराहे पर रखना। पैनल्टी के लिये छोड़िये मुझे क्या आपको सुनकर-पढ़कर-याद कर के दुःख होगा कि एक दिन में मात्र 3500 रुपए निकाले थे।

इन सारे उपचारों को करने के पश्चात् मेरे पति की हालत में सुधार होता चला गया और हम वाराणसी मूर्ति स्थापना में कर पाए।

वेटिंग टिकट कैसे स्थाई (कन्फर्म) हुए

मूर्ति स्थापना के लिये कोलकाता से ट्रेन द्वारा वाराणसी पहुँचना भी प्रभु श्री कल्कि का एक अद्भुत चमत्कार था। हम 8 लोग बनारस जा रहे थे परन्तु हमारी स्थाई (confirm) टिकट नहीं हुई थी। स्टेशन पर पहुँचकर पता चला कि टिकट का स्थाई होना नामुमकिन है। हम सबने मूर्ति स्थापना में बनारस जाने का इरादा छोड़ वापिस अपने घर की ओर प्रस्थान किया। हमारा एक साथी वरुण चौधरी काऊंटर पर अस्थाई (वेटिंग) टिकट वापिस कराने गए और चमत्कारिक रूप से काऊंटर कलर्क ने बिना कोई अतिरिक्त रुपया लिये सभी टिकटों को स्थाई (confirm) कर के वरुण चौधरी को दे दीं। मानो नृसिंह के भात की तरह प्रभु श्री कल्कि काउन्टर कलर्क बनकर बैठ गए और हम सब कल्कि जी का जयकारा लगाते हुए वाराणसी पहुँच गए।

कल्कि भगवान पग-पग पर अपने भक्तों के जीवन में अपने यह वचन सत्य प्रमाणित करते हैं कि- **तू एक कदम मेरे लिये बढ़ा कर तो देख, तेरे लिये सारे रास्ते न खोल दूं तो कहना।**

कल्कि भगवान से जुड़कर उनके कार्य करने की प्रक्रिया में मैं एक विशेष तथ्य से कल्कि भक्तों को सावधान करना चाहती हूँ कि वास्तव में भगवान श्री कल्कि की अवतार लीला और उनकी दैवी शक्तियाँ कल्कि जी के हर कार्य में **बहुत ज्यादा सक्रिय हैं और जुड़ी हुई हैं। कल्कि जी के किसी भी कार्य को कल्कि भक्त परिवार के किसी भी सदस्य को हलके में नहीं लेना चाहिए।**

मेरे पति एकदम स्वस्थ थे और अपने व्यापार का बहुत अच्छे से काम काज सम्भाल रहे थे कि अचानक उनकी तबीयत फिर खराब हुई और एकदिन वह बेहोश हो गए। बड़े-बड़े डॉक्टरों को दिखाया पर कोई भी गंभीर बीमारी पकड़ में नहीं आई। मेरे पति की हालत प्रति दिन बिगड़ने लगी। वह अपना आत्म विश्वास और संयम खो रहे थे। कई बार वह इतने कमज़ोर हो जाते थे कि अकारण लगातार रोने लगते थे। समझाने पर भी वह अपने आपको नहीं संभाल पाते थे। मुझे एक छोटे बच्चे की भांति उन्हें संभालना पड़ रहा था। इस चक्कर में मेरी पूजा पाठ भी ढंग से नहीं हो पा रहा था। मैं बहुत विचलित थी कि मैं तो सब कुछ ठीक से कर रही हूँ फिर भी मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? उस समय मामाजी और इंदु मासी जो मुझे समझाना चाह रहे थे वह मैं ठीक से समझ नहीं पा रही थी। बीच में मैं आपको यह भी बताना चाह रही हूँ कि मेरे पति के कई प्रभावशाली व्यक्तियों सअच्छे संबंध है। वह कई बार हंसते हुए मुझसे कहते थे कि यदि मैं कल्कि जी की मूर्ति लगवाने की कोशिश करूँ तो बहुत अच्छी-अच्छी जगाहों पर मूर्ति लगवा सकता हूँ। तब मैं उनसे कहती थी कि आप ऐसा कीजिए तो वह हँसकर यह कह कर टाल देते थे कि तुम कर तो रही हो।

जब मेरे पति की तबीयत खराब हुई तब एक दिन वह बहुत व्याकुल होकर रो रहे थे और रोते-रोते ही उनको 10 मिनट के लिये नींद आ गई। आँख खुलने पर उन्होंने बताया,''**स्वप्न अनुभव में उन्हें दिखा 3-4 जगह कल्कि जी की मूर्ति स्थापना हो रही है।**'' मैंने मौसी के कहने से तुरन्त पाँच मूर्तियों की स्थापना का संकल्प ले लिया।

मैंने इंदु मासी ने मुझे कहा कि मुझे अपने पति के साथ मंदिरों में जाना है और कल्कि जी की मूर्ति की स्थापना के लिये मंदिरों के ट्रस्टियों से पति द्वारा ही बात करानी है। मैंने इस कार्य को अपने पति द्वारा आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

अलिपुर, कोलकाता का एक समृद्ध इलाका है जहाँ एक बहुत बड़े मंदिर का निर्माण हो रहा था। उस मंदिर में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना के लिये मैंने अपने पति द्वारा वहाँ के ट्रस्टियों से बात कराई। उस मंदिर के अधिकारियों द्वारा हमें स्वीकृति मिली तभी से मेरे पति की हालत में सुधार आने लगा। वे मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ होने लगे। अब तो डॉक्टर के द्वारा बताईं दवाइयाँ भी असर करने लगीं। फिर कोलकाता के कल्कि परिवार के साथ मिलकर हम लोगों ने मंदिर में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना करी।

प्रभु कल्कि का असीम चमत्कार था कि अलिपुर मंदिर में मूर्ति स्थापना होने के बाद से ही मेरे पति हर दिन के हिसाब से स्वस्थ होते चले गए।

विशेष:- **मामाजी के अनुसार हमने हलवाई भण्डारे के लिये नहीं बुलाया। सब कल्कि परिवार जन से बोल दिया कि वह कल्कि जी के लिये प्रसाद बनाकर लाएं। कमाल है, उसी में से भगवान का भोग लगाया, पंडितों को जिमाया, कुछ भण्डारे रूप में बाँटा, बाकी सबने खाया और बचा बाँटा। मामाजी ने कहा था सब बोलेंगे कि तुम कंजूस हो गई हो, पर चुप रहना कुछ बोलना नहीं।**

यह भगवान विष्णु श्री कल्कि जी की माया है भाई सो बोल-कबोल लिख कर रखें मन बदल जाता है

(श्री कल्कि पुराण से उद्धत अनन्त मुनि की माया की कथा चतुर्थ अध्याय श्लोके नं. 31-52 तक पेशानियों से बचने के लिए बन पड़े तो अवश्य पढ़ें)

—श्री अनुज रस्तोगी, ज्योतिष विशारद 9891212606

(दुर्योधन में भी अच्छी बुद्धि, अच्छे विचार थे लेकिन उसे कुसंगत ने मारा) इसी प्रसंग में एक बार दुर्योधन तेल मलवा रहा था। तभी एक ब्राह्मण उससे मिलने आया। ब्राह्मण को देखते ही दुर्योधन ने उल्टे हाथ से तेल से भरा सोने का कटोरा ब्राह्मण को दान में दे दिया। इस पर मालिशिया ने कहा कि राजा यह दान सीधे हाथ से देते तो अच्छा था। इस पर दुर्योधन बोला कि चुप कर तुझे नहीं पता कि जब तक मैं इसे सीधे हाथ में लेता हो सकता है तब तक मेरा मन बदल जाता)

शेष पृष्ठ 6 पर

आओ भक्तों अब हम सब मिलकर कल्कि जी की मूर्ति लगायेंगे

—मामाजी मो० 9136377829

सतसंग में श्री गुरु जी ने कई बार बताया कि कल्कि जी की जयंती-उत्सव-तिथियों के चक्करों में लकीर के फकीर न बनकर सबकी सहूलियत के हिसाब से कल्कि जी के कार्य करो क्योंकि यह युगावतार का मामला है।

साथियों, आज बहुत तेजी से जगह-जगह भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना हो रही है। दूसरे शब्दों में कहें तो कलियुग से मोर्चा लेने के लिए चमत्कारी श्री कल्कि भगवान अपनी छावनियाँ स्थापित कर रहे हैं। यह बात हम प्रमाण के साथ इसलिये कह सकते हैं कयोंकि जो भी कल्कि भक्त मूर्ति स्थापना का प्रोजेक्ट लेता है उसे पग-पग पर चौतरफा परेशानियों के बावजूद अनुभवों (स्वप्न-जागृत, वाणी, मानसिक) के माध्यम से मार्ग दर्शन और सहायता भी मिलती है।

बन पड़े तो भविष्य में मूर्ति स्थापना दिवस शनिवार एवं रविवार निर्धारित करें सब ऋषि-मुनि, देवी-देवता हमारे साथ हैं

आज कल्कि बाल वाटिका मूर्ति स्थापना के लिए अपने कल्कि भक्त साथियों को सुगम तरीका दे रहे हैं। मूर्ति स्थापना के लिए शास्त्रों की बात मानते हुए हम हमेशा विद्वान पंडितों से उत्तम मूहर्त पूछ कर उसी हिसाब से मूर्ति स्थापना का दिन निर्धारित करते आए हैं। लेकिन इसमें हमने पाया कि जब भी स्थापना का दिन सोमवार से शुक्रवार के बीच में होता है तो नौकरी करने वाले व व्यवसायी परिवारजनों का न आने से मूर्ति स्थापना का महोत्सव फीका तो लगता ही है साथ ही मूर्ति स्थापना करने वाले भक्तों में भी उत्साह का अभिर्भाव रहता है। इस परेशानी को दूर करने के लिए कल्कि भक्तों से निवेदन है वे सहूलियत के हिसाब से मूर्ति स्थापना की पूजा के लिऐ आगे से शनिवार एवं रविवार का दिन निर्धारित करें। सहूलियत के हिसाब से कल्कि भगवान की स्थापना पूजा इत्यादि का कार्य करके भाग्यशाली से महाभाग्यशाली बनें और बनाएं।

मेरी यह बात बहुत बड़ी आलोचन का विषय हो सकती है लेकिन विश्वास मानिए यह बात व्यक्ति विशेष की मर्जी से नहीं कही जा रही है। कल्कि भगवान के विभिन्न कार्यों का सम्पन्न करने के लिए जो निर्देश स्वप्नानुभव द्वारा भक्तों को मिले हैं एवं कई बार परिस्थिति वश स्थापित विधान के विपरीत जाकर जो कार्य भगवान श्री कल्कि ने हमसे करवाये हैं—उन सबका विश्लेषण करने के पश्चात् यह बात प्रमाणिक रूप में निकल कर आई है।

1. उदाहरणार्थ— सन् 2004 में 20 नवम्बर को कालका माँ के सिद्ध पीठ (नेहरू प्लेस, नई दिल्ली) में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना हुई थी। इतने बड़े सिद्ध पीठ में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना किसी चमत्कार से कम नहीं थी। उस समय मूर्ति स्थापना के दौरान कलियुग ने हमारे समक्ष कई समस्याएं उत्पन्न की थीं। उसमें सब से बड़ी समस्या थी कि जिन महन्त श्री दिनेश पंडित जी के कार्यकाल में कालकाजी मंदिर में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना हा रही थी (कालका जी मंदिर में हर दो महीने में पंडित जी की बारी (सेवा) बदल जाती है) उनकी बारी समाप्त होने वाली थी। उन्हें और लोगों का विरोध झेलना पड़ रहा था। इसलिए उन्होंने स्पष्ट कह दिया था कि यहाँ मूर्ति स्थापना की तीन दिन की पूजा नहीं हो सकती है। सिर्फ एक रविवार का दिन ही हमारे पास था जिस दिन यह कार्य हो सकता था। जब हमने मूहर्त के हिसाब से रविवार का दिन दिखवाया तो पंडितों ने स्पष्ट मना कर दिया कि इस दिन तो पंचक लगा हुआ है और पंचक में कोई भी शुभ कार्य नहीं होता है। हम लोग बड़ा घबराए की अब क्या करें फिर हम तीन साथी आचार्य प्रभाकर मिश्र (बाद जगद्गुरु) के पास गए और उनको सारी बात बताई। उन्होंने बड़े ही स्पष्ट रूप से कहा कि भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना के इतने शुभ कार्य में पंचक का अशुभ काल क्या नुकसान कर सकता है? अच्छा ही है पंचक में मूर्ति लगेगी तो एक साल में कल्कि जी की और पांच मूर्तियों की स्थापना हो जाएगी। (शास्त्रों के अनुसार यह मान्यता है कि जिस भी व्यक्ति की मृत्यु पंचक काल में होती है तो उसके घरवालों को पंचक शांत कराने पड़ते हैं नहीं तो मृत व्यक्ति के परिवार से पांच अन्य लोगों की मृत्यु हो सकती है)

आचार्य प्रभाकर मिश्र जी की बात मान कर हमने उनसे ही उसी रविवार को मूर्ति स्थापना का कार्य करवाया और सूक्ष्मरूप में तीन दिन की पूजा का सारा विधान एक ही दिन में किया। बल्कि बाद में हमारे मन में थोड़ा संशय भी रहा कि पूर्ण विधि विधान से मूर्ति स्थापना की पूजा परिस्थिति वश नहीं हो पाई। लेकिन प्यारे बच्चों, आज दस वर्षों पश्चात् जब हम इस कल्कि जी के कार्य के निमित्त इन दश वर्षों का अवलोकन करते हैं तो हम पाते है कि कालका जी मंदिर में जिस भी तरह से यह अतिपुनीत कार्य सम्पन्न हुआ उसे पूर्ण रूप से भगवान श्री कल्कि और माँ कालका ने स्वीकार है। तभी तो इन दस वर्षों में कल्कि जी के प्रसार प्रचार का कार्य दिन दूनी रात चौगुनी चाल लिये हुए है।

2. उदाहरणार्थ— इसी प्रकार एक और दृष्टान्त हम आपको बताना चाहेंगे। शास्त्री नगर-(गुलाबी बाग, नई दिल्ली) के माँ वैष्णों के विशाल मंदिर में कल्कि भगवान की मूर्ति के लिये सन् 2006, फरवरी में हमें अनुमति मिल चुकी थी। तभी 15 दिन में कल्कि जी की मूर्ति गुलाबी बाग मंदिर में रखवा दी गई थी। लेकिन वही कलियुग का खेल था मूर्ति स्थापना कराने का स्थान नहीं दिया जा रहा था। इसी कशमकश में छः महीने बीत गए। फिर मुझे (मामाजी) स्वप्नानुभव में माँ वैष्णों ने रास्ता दिया कि मुझे अपने छः सात साथियों के साथ वहाँ जाकर बैठना है। हमने वहाँ के प्रधान जी से समय लेकर मंदिर पहुँच गए। लेकिन समय देने के पश्चात् भी प्रधान जी वहाँ नहीं आ पाए। उनका इंतजार करते करते शाम के चार बज गए। यह भी शक्तियों का ही खेल था। प्रधान जी ने आने पर अपनी मजबूरी बताई की उन्हें काफी विरोध का सामना करना पड़ रहा है इसलिए वे हमें चाह हुआ स्थान नहीं दे पर रहे हैं। फिर संकल्प, उपचार की शक्तियों की लीला घटी और उन्होंने हाँ कर दी। फिर हमारे सामने मजबूरी उत्पन्न हुई कि हमें एक हफ्ते के भीतर ही भवन इत्यादि बनवा कर मूर्ति की स्थापना का कार्य पूरा करना है।

उस समय पित्र पक्ष चल रहा था और नवरात्रों में ही हमें हर हाल में

मूर्ति स्थापना करवानी थी। फिर बड़ी अड़चन आई कि मंदिर के सबसे बड़े विद्वान पंडित अड़ गए कि शरद श्रुत् के नवरात्रों में भगवान विष्णु की मूर्ति स्थापना का कार्य हो ही कैसे सकता है। भगवान विष्णु इस समय पाताल लोक में रहते हैं। चतुर मास देव उठनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु जागते हैं।

हम फिर प्रभाकर मिश्र जी (बाद में जगद्गुरु)के पास पहुँचे। उन्हें पुन: अपनी समस्या बताई। फिर उन्होंने शास्त्रों के आधार पर ही कहा कि यह कलियुग के युगावतार श्री कल्कि का कार्य है इसमें रुकावट मत गेरो। इस समय महाविष्णु सोते है तो क्या हुआ1 नवरात्रों में महाकाली तो जागती हैं। माँ जगदम्बा के काल में विषम परिस्थितियों में मूर्ति स्थापना का काम हो सकता है। फिर जब हमने कहा कि वहाँ के विद्वान पंडित को मनाना आसान नहीं है। तब प्रभाकर मिश्र जी ने शास्त्रों के आधार पर उपर्युक्त तथ्य हमें दिए जिनके आधार पर मंदिर के विद्वान पंडित जो पहले तरह-तरह के अनिष्टों से डरा रहे थे हमें मना नहीं कर पाए और उन्होंने अपनी सम्मति प्रदान की * (नोट यहाँ यह बताना आवश्यक है कि वह यहाँ के प्रमुख विद्वान आचार्य हैं)। इस प्रकार सफलता पूर्वक उस मंदिर में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना का कार्य पूर्ण हुआ।

विशेष:- **जो जो भक्त** इस मूर्ति स्थापना के कार्य में सम्मिलित हुए थे **उनपर कल्कि जी की विशेष कृपा बरसी।** यह बात हम आपको श्री कल्कि बाल वाटिका पत्रिका द्वारा भी बता चुके हैं कि अगले दिन यजमान बनी सुश्री इंदु बंसल की बेटी की शादी पक्की ही नहीं हुई बल्कि शाम को रोकना भी हो गया। उन्हीं की बहिन कोलकाता निवासी सुश्री प्रतिभा अग्रवाल के बेटे को स्वास्थय लाभ मिलता चला गया आदि।

यही एक सुक्ष्म बात स्वयं मुझे (मामाजी) भगवान कल्कि ने अनुभव में बताई थी। एक बार मैं श्री कल्कि विष्णु मंदिर, चौक कूण्डेवालान में पूजा करने गया था। वहाँ पंडित जी नहीं थे। उनका 15 वर्ष का बेटा प्रेम बैठा हुआ था। मुझे (मामाजी) पूजा करवानी थी और मजबूरी वश उस छोटे से लड़के से ही करवानी पड़ी। मेरे मन में थोड़ा मलाल हो रहा था कि पूजा चालू ब्रान्ड हुई है। तब स्वयं कल्कि जी ने मुझसे स्वप्नानुभव में कहा ''तु क्यों चिंता करता है कि पूजा ठीक से हुई या नहीं हुई। स्वीकार तो मुझे ही करनी थी ना और मैंने कर ली। तू तो बस खड़ा रह और काम करता चल।''

निष्कर्ष:- आज कल्कि भक्तों को योद्धाओं की तरह कल्कि जी के प्राकट्य प्रचार के लिए काम करना है। यदि हम सीमित दिमाग के साथ व्यर्थ के विवादों में पड़कर सामने आया अवसर गंवा देंगे तो साथियों हम सफल नहीं हो सकते (भूख लगी है जब जहाँ जो मिले खाकर सन्तुष्ट होते चलें। क्योंकि कलियुग हर पल हमारे रास्ते में काँटे बिछाने के लिए तैयार खड़ा है। और कल्कि जी हाथ पकड़कर हमें आगे लिवाये लिये चले जा रहे हैं।

बस हमारी सबकी भगवान से यही प्रार्थना होनी चाहिए—
पग पग पर बाधा ठाड़ी है। पाँव धरन को जगह नहीं है।
हे संभल सरकार विपद के भार हटा देना।

पृष्ठ 4 का शेष

निष्कर्ष : शुभ कार्यों में मन बहुत जल्दी डांवाडोल हो जाता है और उसका मन तुरंत ही ऐसी बातें सोचता है या औरों की मानता है ताकि बोल-कबोल अथवा शुभ कार्य संपन्न न हों।

श्री कल्कि बाल वाटिका के अनुभव पैनल मैंबर के हृदयों से प्रभु कल्कि के लिए आभार निकलता है जब उनके द्वारा बताए रास्तों से कल्कि भगवान के भक्त खुशी व वैभवता की ऊँचाइयों पर पहुंच जाते हैं, अपितु यह सुन कर वह खुश होकर फिर इसे बिसार (भूल) देते हैं लेकिन जब कुछ भक्त ऊँचाइयों से नीचे गिरते हैं तो उसका उन्हें बहुत मलाल रहता है जिसे वह जगह-जगह कल्कि समाज को बता कर अन्य भक्तों को गिरने से रोकना चाहते हैं। जब कल्कि भक्त परेशानी में होता है तो वह पैनल मैम्बरों के बताए तरीके से बोल-कबोल में भगवान का एक प्रतिशत से 5 प्रतिशत तक का हिस्सा (शेयर) कबूल तो कर लेता है, (क्योंकि उस समय उसे लगता है ऐसा मेरा भाग्य कहाँ जो यह कह रहे हैं ऐसा हो तो सकता नहीं है) सो शुरू में जब जब हजार में 10, एक हजार में सौ व एक लाख में से 1000 तो वह आराम से दे देता है लेकिन जब यही सम्पदा उसे करोड़ों में मिलती है तो उसके विचार डगमगा जाते हैं। अब वह यह शेयर का रुपया कल्कि जी के प्रोजेक्टों के अलावा अपने मन मुताबिक अथवा औरों के नाम लेकर रोक लेता है अथवा उसमें कुछ कहीं और धार्मिक जगहों पर लगा देता है। उस समय कलियुग हरकत में आ जाता है खासतौर से धूमावती माँ (पुलिस, इन्कम टैक्स, एक्साइज की तरह) जिनके दिल में कोई दवा नहीं होती। वह भक्त के जीवन में तबाही मचाने के लिए पिछली पापों की फाइल खोल कर उन्हें दंडित करने के लिए कल्कि भगवान की इजाजत लेने जाते हैं। भगवान श्री कल्कि अपनी न्याय व्यवस्था के अनुकूल (क्योंकि देवता, राक्षस दोनों उनके हैं) उन्हें इजाजत दे देते हैं साथ ही अपने भक्तों और परिवार जनों को जिनका इंटरनेट (अनुभव ग्रहण करने की शक्ति) चालू है,अनुभव दे देते हैं कि संभल जाओ तुम्हारा बुरा होने वाला है। इसी संदर्भ में मामाजी यही कहते हैं कि जब भी आप दुख में अथवा वैभवता प्राप्त करने के लिए कल्कि जी के बोल-कबोल करते हैं तो लिख लें उसके साथ 50 या 100 रुपए का नोट लगा कर एक जटा वाले गोले के साथ बांध कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। थोड़े समय बाद जब आपके कार्य पूरे होने लगे तो उस पेपर को पढ़िए और जब जितना रुपया ज्वैलरी-सम्पत्ति-मकान-जमीन आपको मिले उसमें से तुरंत कल्कि जी का शेयर निकाल कर उनके प्रोजेक्ट के लिए श्री कल्कि बाल वाटिका में जल्द से जल्द भेजने की कोशिश करें। यह बहुत ही सतर्क रहने व ध्यान देने योग्य है कि प्रभु श्री कल्कि को उधार पसंद नहीं है। अगर फिर भी आप देने में असमर्थता प्रकट करते हैं कि ज्वैलरी, जमीन कैसे बेचें जब बिकेगी देख लेंगे। ऐसा न सोचें एक लाख पर 500 रुपए का ब्याज के प्रतिमाह के हिसाब से दे सकते हैं जिसे भगवान ने स्वीकार कर लिया है। सुविधा बनने पर असल उन्हें दे देवें। भगवान श्री कल्कि को प्रगट होने के लिए अपने सवा लाख भक्त चाहिए। आपकी बोल-कबोल के रुपए से ही कल्कि के प्राकट्य, प्रचार, साहित्य प्रोजेक्टों से यह सब संभव होकर रहेगा।

शेष पृष्ठ 8 पर

कल्कि साहित्य समाप्ति के कगार पर

बन पड़े तो अपने शुभ के रुपयों में से सहयोग साहित्य प्रभारियों के पास भेजें

मेघना गोयल-9163778 29

पूजा गुप्त-9811858723

सुषमा गोयल-9899698240

रेनू बंसल-9818000004

रश्मि गुप्त-9711108050

मामाजी-9136377829

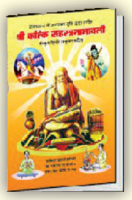

डी.वी.डी.

यू.एस.बी. | पैन ड्राइव

मंत्र बॉक्स

श्री कल्कि जी का शुभ का खजाना

अपनी आमदनी में से कम से कम एक प्रतिशत अधिक से अधिक दस प्रतिशत रुपया भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें।

इस खजाने को कहाँ लगाएं?—श्री कल्कि बाल वाटिका की संस्कार रोपण कार्यशालाओं, श्री कल्कि जी के हवनों, सत्संग, कल्कि जी के उपचारों में, कल्कि जी के महोत्सवों-कीर्तन, अनुभव गोष्ठी, मूर्ति स्थापना, शोभा यात्रा, कल्कि जी के उत्सवों में आने जाने मे, कल्कि जी के आगामी बनने वाले संग्रहालयों में एवं कल्कि जी के अन्य प्रचार के कार्यों में लगाएं। साहित्य में कम से कम 25 से 30 प्रतिशत अवश्य लगाएं, इससे आपके घर एवं व्यापार के प्रगति के मार्ग योजनाबद्ध तरीके से खुलते चले जाएंगे।

अग्रोहा धाम हरियाणा में कल्कि म्यूजियम बनना शुरू इसमें हमें चाहिए आपकी अच्छी सोच एवं आपका विश्वास एवं सहयोग

अपने शुभ/धर्म में से जो भी सहयोग आप देंगे वह अमूल्य चिरकाल तक धर्म के मानने वालों को रास्ता देगा और उसकी रॉयल्टी आप सहयोग करने वालों को हमारे गुरु श्री हनुमान जी/ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के शब्दों में मिलेगी—

एक दान दें आप सहस्त्रदान पाने के हकदार बनें

आप अपना सहयोग चैक अथवा कैश श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन के नाम से भेज सकते हैं।

रूका हुआ रूपया/ज्वैलरी/प्लॉट/मकान/दुकान : आपका रूपया यदि कहीं रूक गया है अर्थात् नहीं मिलने की उम्मीद है तो जैसा भगवान ने स्वप्नानुभव में बताया है 1 प्रतिशत 2 प्रतिशत या 5 प्रतिशत के हिसाब से रूपया आने पर कल्कि जी के कार्यों (प्रोजेक्टों) में लगाने का संकल्प लें।

1 प्रतिशत, 2 प्रतिशत एवं 5 प्रतिशत : अगर उम्मीद है कि आपका रूका हुआ रूपया मिल सकता है तो रूकी हुई राशि के 1 प्रतिशत का संकल्प लें, अगर उम्मीद कम है तो 2 प्रतिशत का संकल्प लें, और अगर बिल्कुल उम्मीद नहीं हो तो 5 प्रतिशत का संकल्प लें। जब रुपया आए कल्कि जी का रुपया दे देवें।

जैसे जैसे रूपया आता रहे वैसे कल्कि जी का रुपया दे देवें। उन्हें उधार पसंद नहीं है। किसी प्रापर्टी या मुकदमे के लिए आप 5 प्रतिशत का शेयर भगवान का बोल देंगे तो सब रूपया आना शुरू हो जाता है।

शादी में विघ्न या रूकावट होने पर कल्कि भगवान के उपचारों से 1 (प्रतिशत) कल्कि जी को देना है जितना रूपया आप शादी में लगा रहे हों।

शर्तें लागू—यह कल्कि जी के मानने व कार्य करने वालों पर लागू हैं जिन्हें स्वप्नानुभव आते हैं

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 7 दिसंबर 2014
स्थान : मामाजी बी-2, बहादुर अपार्टमन्ट, सिविल लाईन्स, नई दिल्ली
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री कल्कि बाल वाटिका:- (मामाजी)
बन पड़े तो सही आइ. सी. यू. उपचार एवं अनुभव का अर्थ जानने के लिए अपने अनुभव लिखकर डुप्लीकेट अथवा फोटो कॉपी कराकर लाएं

दिनांक : शनिवार 13 दिसंबर 2014
स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट पटपड़गंज दिल्ली-92
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (9136377829)

श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं :
*** चाँदनी चौक * दिल्ली विश्वविद्यालय * नोएडा * पंजाबी बाग * पटपड़गंज * गगन विहार * यमुना विहार * महावीर नगर * ग्रीन पार्क * रोहिणी * सब्जी मंडी, घंटाघर * सम्भल * कोलकाता * असरोही**

facebook.com/shreekalki

www.youtube.com/merekalki

Watch popular Kalki videos and listen Kalki Bhajans on our youtube channel and join the other 10,457 viewers.

-Vishnu Goel (7503215553)

कल्कि जी की अखंड जोत

अपने घर व व्यापार की वैभवता के लिए श्री कल्कि विष्णु मंदिर में अखंड जोत में घी अथवा रुपए सामर्थ्य के अनुसार देने हेतु संपर्क करें : श्री राहुल अग्रवाल (9891879718)

कल्कि जी का भंडारा

मात्र 500 रुपए देकर अपने अथवा अपने परिवार पर आई विपदा के लिए कल्कि विष्णु मंदिर, कुंडे वालान में अपने हाथ से फूल माला चढ़ा कर आरती करके भगवान श्री कल्कि को भोग लगाकर शाम 7 बजे प्रति बुधवार भंडारा बांटे। संपर्क : श्री योगेश गुप्ता (9311033445)

Registered with the Registrar of Newspaper for India under Licence No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL (DG)-11/8061/2012-2014

publication date 1-30 December मूल्य 10 रूपए posting date1-8 december दिसंबर 2014 weight-25 grams

सी सी एन चैनल पर दिखाए गए कल्कि जी के कार्यक्रम वो आ रहा है की प्रमुख झलकियाँ

हे अर्जुन जब जब पृथ्वी पर धर्म की हानि होगी तब तब मैं अवतार लेकर पृथ्वी की रक्षा करूँगा

महाविष्णु भगवान कल्कि के रूप में अवतार लेकर गौ, विप्र, धर्म, सज्जनों की रक्षा करेंगे।

रामावतार से माँ वैष्णवी भगवान श्री कल्कि की प्रतीक्षा में तपस्या कर रही हैं।

कुमार अक्षय गड़ौदिया एवं कुमारी साक्षी भगवान विष्णु एवं लक्ष्मी जी की भूमिका में

यमुना घाट पर प्रातः 5 बजे ठिठुरती सर्दी में इन भाग्यशाली भक्तों ने कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ में भाग लिया

मामाजी, रेनू बंसल, आशा कंवर, ललित कंवर, सुषमा गोयल, रमा गड़ौदिया, संजू गड़ौदिया, अशोक गड़ौदिया, साक्षी गड़ौदिया, इंदू बंसल, हर्षित बंसल, राकेश अग्रवाल, सुरभि अग्रवाल, रिधिमा अग्रवाल, कनिका मोदी, हितेश मोदी, आद्या मोदी, अंकुर गोयल, शलभ गोयल, राजेश, अंजू, सुमि गुप्त, रीता मेंहदीरत्ता, पूजा गुप्त, अलका गोयल, रश्मि गुप्त, शशि गोयल, शुभम गुप्त, सताक्षी गुप्त, राहुल अग्रवाल, इंदू गुप्त, अनिमेष गड़ौदिया, सविता, पदम गोयल, मुक्ता गोयल, मनोज पांडे, शालिनी पांडे, पूर्णिमा अग्रवाल, सीता गुप्त, नमिता गुप्त, क्षितिज गुप्त, श्रेयांस गुप्त, सारिका गुप्त, डॉली (नैनी) रजनी कटायिा, संगीता अग्रवाल, लावण्या अग्रवाल, ऊषा गोयल, संगीता गुप्त, अनिरूद्ध गुप्त, राजेश गुप्त, इंदू गुप्त, नमिता गुप्त, आदर्श सिंघल, सविता सिंघल, प्राची अग्रवाल, राहुल अग्रवाल, अंकित गड़ौदिया, शोनित, अनुज रस्तोगी, संगीता रस्तोगी

भगवान श्री कल्कि की सत्संगमयी भजन संध्या

तिथि : 14 दिसंबर 2014

स्थान : वात्सल्य मंदिर, सैक्टर-7 रोहिणी

समय : दोपहर 3 बजे से रात्रि 8 बजे तक

संयोजक : श्री अभिषेक अग्रवाल एवं सरिता अग्रवाल

खेल खेल में संस्कार रोपण कार्यशाला

दिनांक : 28 दिसंबर 2014, रविवार

श्री कल्कि सहस्त्रनाम हवन : प्रातः 10 बजे

महामंत्र मुकाबला एवं कार्यशाला 11 बजे से 2 बजे तक

स्थान : 1903, पहली मंजिल चांदनी चौक, दिल्ली-6

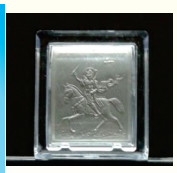

आस्था के कारण जितनी पुरानी पूजा की मूर्ति उतनी ज्यादा तेजस्वी

प्रस्तुत है विश्व वि यात कंपनी **देवआस्था** द्वारा निर्मित भगवान श्री कल्कि की सोने, चांदी 999 की मूर्ति लॉकेट सिक्के भक्तों की पूजा, गाड़ियों, गले में एवं जन्मदिवस, शादी की सालगिरह, शादी में विभिन अवसरों के लिए उपलब्ध। कल्कि बाल वाटिका इसकी कुछ लागत स्व्यं वहन कर रही है अतः इसकी कीमत कम है। यह मूर्ति साढ़े तीन बाय ढाई इंच की मात्र 535 रुपए में उपलब्ध है।

स पर्क: राहुल अग्रवाल- 9891879718 अलका गोयल-9811281271

पृष्ठ 6 का शेष

अभी देर नहीं हुई

जो भाग्य में नहीं सिर्फ सोच यानि ख्यालों में था कलकि जी वो दिलवाते हैं अतः उस लेन–देन का सैद्वांतिक 1 प्रतिशत से 5 प्रतिशत हिस्सा यानि शेयर कल्कि जी के प्रोजेक्ट का निकालना अथवा देना न भूलें;

अगले अंक में पढ़ें शक्तियों का खेल

श्री कल्कि बाल वाटिका ने समील में 67 बच्चों को एक रूपएके हिसाब से कल्कि जी के कलैंडर बांटे

एल्यूमिनियम फॉयल पर छपा कल्कि भगवान का वर्ष 2015 का कलैंडर अब आपके लिए उपलब्ध व्यापारी अपने ग्राहकों को एवं दोस्तों को भेंट कर पुण्य लाभ प्राप्त करें। मूल्य मात्र 15 रुपए प्राप्ति स्थान : दिल्ली में चांदनी चौक कोलकाता में : सॉल्ट लेक प्रतिभा अग्रवाल

आगामी महीनों में भगवान श्री कल्कि के महोत्सव

सत्संगमयी संकीर्तन महोत्सव एवं माँ दुर्गा की चौकी- 16 फरवरी 2015 :

संयोजक- सुश्री इंदू बंसल-श्री विजय बंसल

सम्भल में श्री कल्कि बाल वाटिका- 1 फरवरी 2015

सम्भल में कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ- 1 मार्च एवं 31 मार्च 2015

श्री कल्कि बाल वाटिका

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें— 9312533445, 9136377829 0911858723

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो

मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी :

हर्षित गुप्त (मनु-9999885277), अंकित गड़ौदिया (9968154304)

राहुल अग्रवाल (9891879718), अलका गोयल (9811281271)

श्री मनोज पांडे (9212703815) द्वारा सी सी एन डेन द्वारा कल्कि जी पर दिखाई डॉक्यूमेंटरी **वो आ रहा है रविवार 30 नवंबर 2014** को पहली बार श्री कल्कि संकीर्तन में केदारा बिल्डिंग में सुश्री रमा गड़ौदिया के यहाँ एल सी डी पर दिखाई गई जिसको कल्कि समाज ने काफी सराहा।